

(क) नैतिक, योग तथा खेल एवं शारीरिक शिक्षा

कक्षा.9

इस विषय में 50 अंकों की लिखित परीक्षा का एक प्रश्नपत्र तीन घण्टे का होगा। इसके साथ ही 50 अंकों की प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। प्रयोगात्मक तथा लिखित परीक्षा विद्यालय स्तर पर आयोजित की जायेगी। लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा में विद्यालय स्तर पर किये गये मूल्यांकन के आधार पर छात्रों को ए0बी0सी0 श्रेणी प्रदान की जायेगी जिसका अंकन छात्र के अंकपत्र तथा प्रमाणपत्र में किया जायेगा।

उद्देश्य-

- (1) बालकों का सर्वांगीण विकास एवं नैतिक गुणों का उन्नयन करना।
- (2) बालकों के वैयक्तिक, सामाजिक एवं शैक्षिक जीवन में नैतिक भावना का विकास करना।
- (3) बालकों में स्वस्थ नेतृत्व, उत्तरदायित्व वहन करने की क्षमता, समय पालन, सदाचार, शिष्टाचार, विनम्रता, साहस, अनुशासन, आत्म सम्मान, आत्म संयम, समाज सेवा, सभी धर्मों के प्रति आदर एवं सहिष्णुता तथा विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास करना।
- (4) सुदृढ़ शरीर का निर्माण करने हेतु शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं की अभिवृद्धि।
- (5) बालकों के श्रम के प्रति आदर एवं आत्म निर्भर बनने हेतु उत्पादक कार्यों के प्रति अभिरुचि का सम्बर्द्धन करना।
- (6) समाज सेवा की भावना का सृजन करना।
- (7) स्वास्थ्य के प्रति सतत् जागरूकता तथा क्रीड़ा शालीनता की भावना का विकास करना।
- (8) बालकों का मानसिक, शारीरिक, नैतिक, सामाजिक एवं संवेदात्मक विकास करना।

नैतिक शिक्षा

- (1) नैतिकता का स्वरूप तथा महत्व। 15 अंक
- (2) स्वयं, परिवार, समाज, देश तथा मानवता के प्रति कर्तव्य। 2 अंक
- (3) भारत में प्रचलित प्रमुख धर्मों (हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई) के मूल तत्वों में समान बातें। 2 अंक
- (4) मानव अधिकार-मानव अधिकार की अवधारणा का विकास, मानव अधिकार की सार्वभौम घोषणा। सिविल और राजनीतिक अधिकार। आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकार। भारत और सार्वभौमिक घोषणा मानव अधिकार के प्रति हमारे कर्तव्य, मानव मूल्यों की रक्षा। 3 अंक
- (5) शिकायत प्रणाली-अधिकार संरक्षण आयोग, चाइल्ड लाइन, वीमेन पावर लाइन। 3 अंक
- (6) आयकर का संक्षिप्त ज्ञान। इसे कौन देता है। आयकर से प्राप्त राशि की देश के विकास में भूमिका का संक्षिप्त वर्णन। बालक-बालिकाओं में वयस्क होने पर ईमानदार कर दाता बनने सम्बन्धी नैतिकता का विकास करना। 3 अंक

पुस्तक मानव अधिकार अध्ययन, प्रकाशक माइंडशेयर

उद्देश्य :

- दैनिकचर्या में "योग" करने की आदत(स्वभाव या संस्कार) का विकास।
- योग के विविध अभ्यासों (आसन, प्राणायाम, ध्यान विधियों) के द्वारा शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पाने का सामर्थ्य विकसित करना।
- किशोरवय की समस्याएं एवं सामान्य व्याधियों को समझकर उनका निदान करने में योग निर्देशन एवं आयुर्वेदिक उपचार करने की क्षमता का विकास करना।
- प्रेरक प्रसंगों से जीवन मूल्यों को समझाने और उन्हें अपने जीवन में उतारने के लिये प्रोत्साहित करना।
- "अष्टांगयोग" के माध्यम से यम,नियमादि को जानकर,योग को समझने की सामर्थ्य विकसित करना।
- अभ्यासादि के क्रम में चक्र विवेचन,शरीर रचना एवं क्रियाविज्ञान से सम्बन्ध को समझने की क्षमता का विकास करना।
- शरीर को स्वस्थ रखने की क्रियाओं(षट्कर्म) की जानकारी एवं उनका प्रयोग करना।

- योग विषयक शब्दकोश के माध्यम से योग के कठिन शब्दों को समझने की क्षमता विकसित करना।

	योग	20 अंक
1- योग एवं योगशिक्षा	योग : अर्थ एवं परिभाषा योग की भ्रान्तियाँ : पारम्परिक, आधुनिक	3 अंक
2- अष्टांग योग	आसन <input type="checkbox"/> आसन की परिभाषा <input type="checkbox"/> उद्देश्य <input type="checkbox"/> आसनों का वर्गीकरण प्रभाव ● शारीरिक, मानसिक, चिकित्सीय	5 अंक
3- अष्टांग योग	अष्टांग योग का संक्षिप्त परिचय ● यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि ● किशोरावस्था में शारीरिक एवं मानसिक परिवर्तन व विशेषताएँ	4 अंक
4-शारीरिक.मानसिक परिवर्तन: योग निर्देशन	● किशोरावस्था में मार्गदर्शन एवं योग की भूमिका	2 अंक
5- स्वास्थ्य एवं आहार	● युक्त आहार क्या है? ● आहार के प्रकार ● सात्विक आहार ● राजसिक आहार ● तामसिक आहार ● आहार-सम्बन्धी आवश्यक नियम खेल एवं शारीरिक शिक्षा	6 अंक
इकाई-1 शारीरिक शिक्षा-	अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य एवं क्षेत्र	02
इकाई-2 शारीरिक शिक्षा का विकास व वृद्धि-	अर्थ, सिद्धान्त, वृद्धि एवं विकास में अन्तर, वृद्धि एवं विकास को प्रभावित करने वाले कारक, कालानुक्रम, आयु, शारीरिक संरचनात्मक आयु एवं शारीरिक तथा मानसिक आयु, बैटरी परीक्षण (शारीरिक क्षमता का मापदण्ड)	02
इकाई-3 स्वास्थ्य-	अर्थ, परिभाषा, स्वास्थ्य के नियमों की जानकारी, स्वास्थ्य पर प्रभाव डालने वाले कारक, प्रमुख बीमारियाँ, स्वास्थ्य के नियमों के पालन की आदत डालना, व्यायाम द्वारा बीमारियों को दूर करना, संतुलित आहार।	03
इकाई-4 कंकाल तंत्र	परिचय, शारीरिक ढाँचे की क्रिया.कलाप, हड्डियों के प्रकार, शारीरिक अस्थियाँ, जोड़ों के प्रकार, जोड़ों की गति।	02
इकाई-5 खेल एवं प्रतियोगिता-	खेल का अर्थ, सिद्धान्त, प्रतियोगिता का अर्थ, आन्तरिक व वाह्य प्रतियोगिता का अर्थ व महत्व, विभिन्न स्तरों पर वाह्य प्रतियोगिता, जनपदीय, मण्डलीय, प्रान्तीय, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय। भारत	03

के महत्वपूर्ण टूर्नामेन्ट, राष्ट्र मण्डलीय खेल, एशिया खेल, ओलम्पिक खेल, ट्रैक टूर्नामेन्ट के बारे में जानकारी देना।

इकाई-6 प्रारम्भिक व्यायाम एवं अन्तिम अवस्था—

03

परिचय, प्रकार, प्रभावी कारक, प्रारम्भिक व्यायाम का महत्व, प्रारम्भिक व्यायाम की विधि एवं अवधि, अन्तिम अवस्था (Cooling Down) का अर्थ, महत्व।

प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम			पूर्णांक-50
क्र० सं०	मद	(क्रीड़ा) कार्य कलाप	वैकल्पिक
1	अभ्यास सारिणीयाँ	अभ्यास सारिणी	सामूहिक पी०टी० योगाभ्यास, सारंग आसन, मत्स्य आसन, उद्दीपन, अग्निसार, सुप्त बज्र आसन। 1 अंक
2	कवायद मार्च	अधिकारी को पत्रिका देना व इनाम लेना, धीमी चाल से तेजचाल में आना, तेजचाल से धीमी चाल में आना, दायें तथा बायें दिशा बदलना	2 अंक
3	लेजियम	मोर चाल, मोर चाल आगे की, मोर चाल दायें और बायें	2 अंक
4	जिम्नास्टिक / लोकनृत्य (क) जिम्नास्टिक	लड़कों के लिए 1-नकीकस सादा 2-तबक फाड़ 3-मयूर पंखी 4-बगली फरार 5-दस रंग 6-पिरामिड (मयूरासन)	4 अंक वाल्टिंग बाक्स, लॉग बाक्स, ब्रांड शहतीर (1) हाथ की पहुँच के ऊपर शहतीर पकड़ना.दायें.बायें चलना (2) हाथ के पहुँच के ऊपर शहतीर लटककर झूले के साथ पकड़ना (3) हाथ पहुँच के ऊपर शहतीर हाथ बदलते हुये पकड़ना लोकनृत्य
	(ख) लोकनृत्य	लड़कियों के लिए 2 लोकनृत्य एक उसी क्षेत्र का दूसरा उसी क्षेत्र के बाहर का	
		लड़कों के लिए दो लोकनृत्य एक उसी क्षेत्र का दूसरा उसी क्षेत्र के बाहर का होना चाहिए।	
5	बड़े खेल	निम्नलिखित खेलों के आधारभूत कुशलतायें फुटबाल, हाकी, बैडमिंटन (जो सुविधायें विद्यालय में उपलब्ध)	कक्षा के लिए निर्धारित खेलों में भाग लेना। 3 अंक
6	छोटे खेल	1-लाइन फुटबाल 2-पिन बाल 3-दायरे का फुटबाल 4-हैण्ड बाल 5-कीप द बाल अप 6-उछलकर चलते हुए छूना/पकड़ना 7-कप्तान बाल 8-छूना व बैठकर बचना	3 अंक

		9-चलती हुयी प्रतिभायें 10-दायरे की हाकी	
7	रिले	1-लीपफ्राग रिले 2-ग्रेसप एण्ड पुल रिले 3-बैक वर्ड रिले 4-तिलंगा रिले 5-चेन रिले 6-बाल पासिंग रिले 7-पिक अ बैक रिले 8-व्हील बैटरी रिले	4 अंक
8	(क) धावन तथा मैदानी प्रतियोगितायें	1-100 मी0 दौड़ 2-400 मी0 दौड़ 3-लम्बी छलांग 4-ऊँची छलांग 5-उछल कदम और कूद 6-4×100 मी0 रिले 7-शाट पुट	4 अंक
	(ख) परीक्षण पदयात्रा	राष्ट्रीय शारीरिक दक्षता परीक्षण 3.22 से 6.44 किलोमीटर	
9	मुकाबले का खेल		4 अंक
	(क) साधारण मुकाबले	1-टेक आफ दि टेल 2-पुश आफ दि बेंच 3-पुश आफ दि स्ट्रल 4-पुश इन्टू पिट 5-मेक पुल	
	(ख) सामूहिक मुकाबले	1-फोर्सिंग दि गेट 2-ब्रेक दि वाल 3-स्मगलिंग 4-प्रिसन ब्रेक	
	(ग) कुश्ती	पैतरे (1) (क) यू का पैतरा (ख) सामने का पैतरा (ग) नजदीक (2) पीछे का पैतरा (3) नीचे का पैतरा (4) प्रिन्स (1) कटार चलाना, आक्रमण व बचाव (2) बायें तथा दाहिने ओर प्रहार करके बचाव (3) पेट का निचला भाग (खोज प्रहार)	
10	राष्ट्रीय आदर्श तथा अच्छी नागरिकता व्यावहारिक परियोजनायें तथा सामूहिक गान		3 अंक
	(क) राष्ट्रीय आदर्श व अच्छी नागरिकता	1-अच्छी आदतें 2-हमारे संविधान के मूल आधार	

(ख) व्यावहारिक परियोजनायें

- 1-प्राथमिक उपचार
- 2-समाज सेवा
- 3-खेल.कूद का आयोजन
- 4-कैंप लगाना

(ग) सामूहिक गीत

राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय भाषा में, एक किसी अन्य क्षेत्रीय भाषा में तथा एक राष्ट्र भाषा में।

पुस्तक "हम और हमारा स्वास्थ्य" प्रकाशक "होप इनीशियेटिव"

11- सूर्य.नमस्कार	<ul style="list-style-type: none">● सूर्य.नमस्कार<input type="checkbox"/> परिचय<input type="checkbox"/> सूर्य.नमस्कार के लाभ<input type="checkbox"/> विधि	2 अंक
12- आसन और स्वास्थ्य	<ul style="list-style-type: none">● पेट के बल किए जाने वाले आसन (त्तवदम च्चेजनतमे)<input type="checkbox"/> पूर्णधनुरासन	2 अंक
13- मुद्रा	<ul style="list-style-type: none">● अपानवायु मुद्रा, सूर्यमुद्रा पूर्व अध्ययन अभ्यास, वायुमुद्रा, शून्यमुद्रा, पृथ्वी मुद्रा, प्राणमुद्रा	ज्ञानमुद्रा, 3 अंक
14- बन्ध	<ul style="list-style-type: none">● जालन्धर बन्ध● उड्डीयान बन्ध● मूलबन्ध● महाबन्ध	4 अंक
15- प्राणायाम एवं स्वास्थ्य	<ul style="list-style-type: none">● भस्त्रिका, कपालभाति (प्राणायाम)<input type="checkbox"/> पूरक, रेचक व कुम्भव की अवधारणा<input type="checkbox"/> बाह्य प्राणायाम, अनुलोम.विलोम,<input type="checkbox"/> नाडीशोधन	4 अंक
16- योग निद्रा	<ul style="list-style-type: none">● योग निद्रा की प्रयोग विधि	3 अंक
17- त्राटक	<ul style="list-style-type: none">● ज्योति त्राटक	2 अंक

निम्न लिखित महापुरुषों की जीवनगाथा का अध्ययन

1. चन्द्रशेखर आजाद
2. बिरसा मुण्डा
3. बेगम हजरत महल
4. वीर कुँवर सिंह
5. ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
6. गौतम बुद्ध
7. ज्योतिबा फूले
8. छत्रपति शिवाजी
9. विनायक दामोदर सावरकर
10. विनोबा भावे
11. श्रीनिवास रामानुजन
12. जगदीश चन्द्र बोस

चन्द्रशेखर आजाद

देश-प्रेम की भावना से ओतप्रोत स्वतन्त्रता आन्दोलन के चर्चित उन्नायक अमर बलिदानी चन्द्रशेखर आजाद का नाम भारतीय इतिहास में सदैव स्वर्णाक्षरों में उल्लेखनीय एवं स्मरणीय है। चन्द्रशेखर आजाद का जन्म 1906 ई० में मध्यप्रदेश के भोंवरा ग्राम में हुआ था, इनके पिता श्री सीताराम अपनी धर्मपत्नी जगरानी के साथ उन्नाव जनपद के बदरका ग्राम से जाकर वहाँ के निवासी हो गये थे। बाल्यकाल से ही स्वतंत्र अवधारणा एवं निर्भीकता से अनुप्राणित आजाद आजीवन स्वतन्त्र रहे। इनके सम्बन्ध में यह घटना उनकी निडरता एवं देश प्रेम की परिपुष्टि करती है। इनके मन में नारी अस्मिता के प्रति अगाध निष्ठा एवं सम्मान का भाव कूट-कूट कर भरा था। शिक्षार्जन हेतु शुभेच्छुओं द्वारा वाराणसी स्थित काशी विद्यापीठ में प्रवेश कराने के बाद अध्ययन करते हुए चन्द्रशेखर तत्कालीन असहयोग आन्दोलन में तिरंगा लेकर आगे-आगे चलते हुए अंग्रेजी सेना द्वारा पकड़े जाने एवं न्यायाधीश के समक्ष उपस्थित किये जाने पर चन्द्रशेखर दृढ़ता के साथ स्वतन्त्रता आंदोलन की सहभागिता स्वीकार करते हुए न्यायाधीश को इन्होंने अपना नाम आजाद, पिता का नाम-स्वाधीन और कारागार को ही अपना आवास बताकर उसका उपहास ही किया।

इस घटना के बाद आजाद का स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु कठिन संघर्ष प्रारम्भ हुआ और दिन-प्रतिदिन वे इसमें तल्लीन होते गये। प्रणवेश चटर्जी, मन्मथनाथ गुप्त आदि के सहयोग से क्रान्तिकारी दल के सदस्य के रूप में इनका परिचय दल के नायक रामप्रसाद बिस्मिल से हुआ। इसके अनन्तर इनका सम्पूर्ण जीवन अंग्रेजों के विरुद्ध उनके षडयन्त्रों की व्यूहरचना में प्रमुखता के साथ व्यतीत होने लगा। घर-द्वार-परिवार से निश्चिन्त मनसा-वाचा-कर्मणा मातृभूमि के लिए समर्पित अजेय योद्धा जीवन पर्यन्त अबन्ध्य व अजेय रहा। किन्तु मित्र के विश्वासघात ने इस अपराजेय देशभक्त को ऐसे संकट में डाल दिया कि वे स्वतः अपने ही हाथों गोली चलाकर मातृभूमि को गोद में सदा के लिए सो गये।

बिरसा मुण्डा

जनजातीय समूह के प्राण कहे जाने वाले बिरसा मुण्डा का जन्म 15 नवम्बर 1875 ई० में (छोटा नागपुर पठार) झारखण्ड के खुंटी जिले के उलीहावु गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम सुगना और माता का नाम करमी पुर्वी था इनका मन हमेशा अपने समाज के उत्थान और ब्रिटिश नीतियों के विरोध में लगा रहता था जिसके कारण इन्होंने ब्रिटिश सरकार की नीतियों से मुक्ति पाने के लिए मुण्डा समाज को एकजुट करके अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 ई० में छोटा नागपुर पठार में भयंकर अकाल पड़ा हुआ था जहाँ पर इन्होंने लोगों की भरपूर सेवा की और राष्ट्र सेवा का अलख भी जगाया फलस्वरूप इनके समर्थक अधिक हो गये। 01 अक्टूबर 1894 ई० में इन्होंने लगान माफी के लिए अंग्रेजों और जमींदारों के खिलाफ आंदोलन किया 1895 में इन्हें गिरफ्तार करके 2 साल के लिए जेल में डाल दिया गया। जेल से छूटने के बाद 1897 से 1900 ई० तक यह लगातार अपने समर्थकों के साथ अंग्रेजी सिपाहियों से युद्ध करते रहे। 03 फरवरी 1900 से चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से अंग्रेजों द्वारा इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 9 जून 1900 ई० में जहर देकर मार दिया गया। बिहार, उड़ीसा, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, और पश्चिम बंगाल में आदिवासी समाज के लोग इन्हें भगवान मानकर आज भी इनकी पूजा करते हैं, और 'धरती आवा' के नाम से पुकारते हैं।

बेगम हजरत महल –

बेगम हजरत महल एक महान भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थी। इन्होंने प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में लखनऊ के क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया और कुछ समय के लिए लखनऊ को अंग्रेजों की सत्ता से मुक्त करवा दिया।

बेगम हजरत महल ने अवध के जमींदारों एवं नवाबों की सहायता से अंग्रेजों पर चौतरफा हमला किया। इन्होंने अपनी प्रजा के प्रति समर्पण और संकल्प इतना प्रगाढ़ था कि वह आगे बढ़कर अंग्रेजी सेना से लोहा (युद्ध) लिया। आलमबाग के युद्ध में हाथी पर सवार होकर क्रान्तिकारियों का नेतृत्व किया। लम्बी लड़ाई के बाद अन्ततः बेगम हजरत महल को पीछे हटना पड़ा। अन्त में बेगम हजरत महल नेपाल प्रस्थान कर गईं।

वीर कुँवर सिंह

कुँवर सिंह का जन्म बिहार में शाहाबाद जिले के जगदीशपुर में सन् 1782 ई0 में हुआ था। प्रथम स्वाधीनता संग्राम सन् 1857 में कुँवर सिंह ने अपना पूरा सहयोग दिया तथा स्वयं अनेक स्थानों पर अंग्रेजी सेना से जमकर लोहा लिया और अंग्रेजों को पराजित किया।

ब्रिटिश इतिहासकार होम्स ने उनके बारे में लिखा है, “उस बूढ़े राजपूत ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अद्भुत वीरता और आन-बान से लड़ाई लड़ी। यह गनीमत थी कि युद्ध के समय कुँवर सिंह की उम्र अस्सी (80) के करीब थी। अगर वह जवान होते तो शायद अंग्रेजों को 1857 में ही भारत छोड़ना पड़ता।” 26 अप्रैल, 1858 को इन्होंने वीरगति पाई।

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

ईश्वर चन्द्र बंधोपाध्याय का जन्म 26 सितम्बर 1820 को मेदिनीपुर, बंगाल में हुआ था। संस्कृत भाषा एवं दर्शन का प्रकांड विद्वान होने के कारण उन्हें विद्यार्थी जीवन में ही संस्कृत कॉलेज द्वारा 'विद्यासागर' की उपाधि मिली। वे बंगाल में पुनर्जागरण के एक प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने रूढ़िवादी हिन्दू समाज को भीतर से बदलने के लिये सामाजिक सुधार किया। विधवा पुनर्विवाह का समर्थन करना और इसके लिए कानून पारित करवाना, भारतीय समाज को उनकी सबसे बड़ी देन है। उन्होंने अपने पुत्र का विवाह भी एक विधवा से किया तथा बाल विवाह का विरोध भी किया। वे नारी शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने बालिकाओं के लिये विद्यालय खोले और शिक्षा के माध्यम से महिलाओं को न्याय और समानता के अवसर प्रदान किये। उन्होंने 'बांग्ला लिपि' की वर्णमाला को सरल एवं तर्कसम्मत बनाया तथा रात्रि पाठशालाओं की व्यवस्था की। उन्होंने संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिये अथक प्रयास किये। उन्होंने संस्कृत कॉलेज में आधुनिक पाश्चात्य विचारों का अध्ययन आरम्भ कराया। उन्हें आधुनिक बंगाली भाषा का जनक माना जाता है। उनका निधन 29 जुलाई 1891 को हुआ।

गौतमबुद्ध (563 ईसा पूर्व – 483 ईसा पूर्व)

बौद्ध धर्म के प्रवर्तक गौतमबुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व लुम्बिनी में हुआ था। इनके पिता का नाम शुद्धोधन तथा माता का नाम महामाया था। 29 वर्ष की आयु में इन्होंने घर त्याग दिया। कठिन तपस्या के परिणाम स्वरूप इन्हें बोध गया में पीपल के वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त किया तथा अपना प्रथम उपदेश सारनाथ में पाँच भिक्षुओं को दिया। यह घटना 'धर्म चक्र प्रवर्तन' के नाम से प्रसिद्ध है। 483 ई0 पूर्व में इन्होंने निर्वाण प्राप्त किया जिसे "महापरिनिर्वाण" कहा जाता है।

जिस समय गौतमबुद्ध द्वारा बौद्ध धर्म का अभ्युदय हुआ उस समय वैदिक धर्म जटिलताओं से भरा हुआ था। भारतीय जनमानस कर्मकाण्डों, यज्ञों की जटिलताओं और सामाजिक असमानताओं से ऊब चुका था। ऐसी स्थिति में इन्होंने एक ऐसे सहज धर्म की स्थापना की जिसने आगे चलकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की। इन्होंने चार आर्य सत्य (क) दुःख, (ख) दुःख समुदय, (ग) दुःख निरोध, (घ) दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा – तथा आष्टागिक मार्ग – (1) सम्यक् दृष्टि, (2) सम्यक संकल्प, (3) सम्यक् वाक्, (4) सम्यक कर्म, (5) सम्यक आजीव, (6) सम्यक व्यायाम, (7) सम्यक ध्यान, (8) सम्यक समाधि का प्रतिपादन किया।

यह धर्म सहज, सरल और बोधगम्य होने के कारण जनमानस का धर्म बन गया और लोकप्रियता के चरम शिखर पर पहुँचा।

ज्योतिबा फूले

19 वीं सदी के प्रमुख समाजसेवक ज्योतिबा फूले का जन्म 1827 ई0 में हुआ था। इन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरीतियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। ज्योतिबा फूले ने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबन्ध करेंगे। उस समय जाति-पाति, ऊँच-नीच की दीवारें बहुत ऊँची थीं। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बन्द थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ते हुए दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चों को छिपा कर लाते और वापस पहुँचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुले आम स्कूल चलाना प्रारम्भ कर दिया।

महात्मा ज्योतिबा फूले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनों से अपने सिद्धान्तों व कार्यक्रमों के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे समाज में शीघ्र ही फैल गया। जीवन भर गरीबों दलितों व महिलाओं के लिए संघर्ष करने वाले इस सच्चे नेता को जनता ने आदर से 'महात्मा' की पदवी से विभूषित किया। उन्हें समाज के सशक्त प्रहरी के रूप में सदैव याद किया जाता रहेगा।

छत्रपति शिवाजी

पश्चिम भारत में मराठा साम्राज्य की नीव रखने वाले छत्रपति शिवाजी का जन्म शिवनेर दुर्ग में 19 फरवरी, 1630 ई० में हुआ था। इनके पिता जी शाहजी भोंसले एक शक्तिशाली सामन्त थे एवं जाधव कुल की असाधारण प्रतिभा सम्पन्न जीजाबाई इनकी माता जी का नाम था। शिवाजी का बचपन इनकी माता जीजाबाई की छत्रछाया में बीता परन्तु इनके व्यक्तित्व पर माता-पिता दोनों के चरित्र का व्यापक एवं सन्तुलित प्रभाव था। इन्हें एक कुशल और प्रबुद्ध राजनीतिक माना जाता है इन्होंने शुक्राचार्य और कौटिल्य की कूटनीतिक गुणों को अपना आदर्श मानकर समरविद्या में 'नवाचार' और 'छापामार युद्ध प्रणाली' अपनाकर मुगल शासक से निरन्तर संघर्ष करके मराठा साम्राज्य को मजबूत बनाया। अपनी अनुशासित सेना एवं सुसंगठित प्रशासनिक इकाइयों की सहायता से योग्य और प्रगतिशील प्रशासन आरम्भ किया तथा 1646 में तोरण दुर्ग जीता। 1656 में चन्द्रराव मोरे जी से जावली जीत लिया। 1664 ई० में सूरत में लूटपाट करके 1665 में पुरंदर की संधि की। 6 जून, 1674 ई० में शिवाजी का रायगढ़ के दुर्ग में राज्याभिषेक हुआ और उन्होंने छत्रपति की उपाधि धारण की। हिन्दुओं की धार्मिक और सांस्कृतिक प्रभावों को पुनर्जीवित किया। 1680 ई० में इनकी मृत्यु हो गयी।

विनायक दामोदर सावरकर

विनायक दामोदर सावरकर भारत के महान क्रान्तिकारी, स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, इतिहासकार राष्ट्रवादी नेता तथा विचारक थे। उनको स्वतंत्रवीर और वीर सावरकर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। उनका जन्म 1883 को भगूर गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम दामोदरपंत तथा माता का नाम राधाबाई था। सावरकर भारत के पहले व्यक्ति थे उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के केन्द्र लंदन में उनके विरुद्ध क्रांतिकारी आन्दोलन संगठित किया। उन्होंने 1905 के बंगभंग के बाद सन् 1906 में स्वदेशी का नारा दिया तथा विदेशी कपड़ों की होली जलाई।

वे भारत के पहले व्यक्ति थे जिन्हें अपने विचारों के कारण बैरिस्टर की डिग्री खोनी पडी। उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता की मांग किया। उनकी पुस्तक प्रकाशित होने के पहले ही ब्रिटिश साम्राज्य की सरकारों ने प्रतिबन्धित कर दिया था। भारत के स्वतंत्र हो जाने के बाद गोवा की मुक्ति की आवाज सबसे पहले उन्होंने ही उठायी थी। वे सभी धर्मों के रूढिवादी विश्वासों का विरोध करते थे।

विनोबा भावे

विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 महाराष्ट्र में हुआ था। विनोबा भावे भारत के मदान स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता और प्रसिद्ध गाँधीवादी नेता थे। यह भावे भूदान यज्ञ ("भूमि सुधार आंदोलन") के संस्थापक थे। 1916 में गाँधी जी के आश्रम (तपस्वी समुदाय) में शामिल होने के लिए अपनी पढ़ाई छोड़ दी, गाँधी जी की शिक्षा से प्रेरित होकर भावे भारतीय ग्रामीण जीवन को बेहतर बनाने के लिए समर्पित हो गये। 1920 –30 के दशक में उन्हें बार-बार कैद किया गया। उन्हें 40 के दशक में रखा गया। उपाधि उपाधियाँ ("शिकक") दी गई। इनकी मृत्यु 15 नवम्बर, 1982 वरधा, महाराष्ट्र में हुआ। उन्हें भूदान आंदोलन के लिए सबसे अधिक लोकप्रियता मिली। सामुदायिक नेतृत्व के लिए सन् 1958 में अन्तर्राष्ट्रीय "रमन मगसायसाय" पुरस्कार पाने वाले पहले व्यक्ति थे।

सन् 1983 में मरणोपरान्त उनको देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया।

श्रीनिवास रामानुजन

महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन का जन्म 22 दिसम्बर सन् 1887 को तमिलनाडु प्रान्त के कुंभकोणम् के पास एक छोटे से गाँव इरोड में हुआ था। वे अत्यन्त निर्धन परिवार से जिज्ञासु वृत्ति एवं कुशाग्र बुद्धि के थे। गणित में विलक्षण प्रतिभा के धनी श्रीनिवास रामानुजन ने गणित के क्षेत्र में अपने कार्य से देश को गौरवान्वित किया है। इंग्लैंड के प्रवास में प्रोफेसर हार्डी के साथ रामानुजन के कुल 21 शोध पत्र प्रकाशित हुए थे। विश्व के सम्मुख रामानुजन को प्रकाश में लाने वाले भी प्रोफेसर हार्डी ही थे। संख्या-शास्त्र, मॉड्युलर फलन शास्त्र, रूढ़ संख्याएँ, हाइपर ज्यामितीय श्रेणी, मॉड्युलर फलन, दीर्घीय फलन, मॉक-थीटा फलन, यहाँ तक कि मैजिक वर्ग के अतिरिक्त दीर्घवृत्त की ज्यामिति एवं वृत्त के वर्गीकरण जैसे गम्भीर विषय रामानुजन के कार्यक्षेत्र में आते हैं। अंकों पर रामानुजन का विशेष अधिकार था। उनके लिए अंकों को समझना अध्यात्म से जुड़ने तथा उनके रहस्य को खोलने की प्रक्रिया थी। उनके अनुसार संख्या $2^n - 1$ में $n=0$ पर इसका मान शून्य रिक्तता का सूचक है। $n=1$ पर इसका मान '1' है जो ईश्वर का स्वरूप है इत्यादि। 1729 को रामानुजन संख्या के नाम से जाना जाता है। 26 अप्रैल, 1920 को 33 वर्ष की आयु में बीमारी के कारण इनका निधन हो गया। इस विलक्षण गणितज्ञ की जयन्ती पूरे देश में गणित दिवस के रूप में मनायी जाती है।

डॉ० जगदीश चन्द्र बोस

डॉ० जगदीश चन्द्र बोस भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक थे। इन्हें भौतिकी, जीव-विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा पुरातत्व का गहरा ज्ञान था। वे पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने रेडियो और सूक्ष्म तरंगों की प्रकाशिकी पर कार्य किया। उन्हें रेडियो विज्ञान का पिता माना जाता है।

बोस का जन्म 30 नवम्बर, 1858 ई० को बंगाल (अब बांग्लादेश) में ढाका जिले के फरीदपुर के मेमनसिंह में हुआ था। उनके पिता का नाम भगवान चन्द्र बसु था। उनकी जीव विज्ञान में बहुत रुचि थी। इन्होंने बेतार के संकेत भेजने में असाधारण प्रगति की और सबसे पहले रेडियो संदेशों को पकड़ने के लिए अर्धचालकों का प्रयोग करना शुरू किया। इन्होंने एक यन्त्र क्रेस्कोग्राफ का अविष्कार किया और इससे विभिन्न उत्तेजकों के प्रति पौधों की प्रतिक्रिया का अध्ययन किया। इस तरह से इन्होंने सिद्ध किया कि वनस्पतियों और पशुओं के ऊतकों में काफी समानता है। 1917 में जगदीश चन्द्र बोस को नाइट की उपाधि प्रदान की गई तथा भौतिक एवं जीव विज्ञान के लिए रॉयल सोसायटी लन्दन के फ़ैलो चुन लिए गए।

विज्ञान के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने वाले महान वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बोस ने 78 साल की उम्र में 3 नवम्बर सन् 1937 ई० में बंगाल प्रेसीडेंसी के गिरीडीह में मृत्यु हुई। उनकी खोज न सिर्फ आधुनिक वैज्ञानिकों को प्रेरित करती है बल्कि विज्ञान के प्रति ललक पैदा करती है।